आधुनिक हिन्दी कविता में सामाजिक विषयों का प्रतिबिंब

किरणदीप कौर, लेक्चरर, डिपार्टमेंट ऑफ़ हिंदी, संत श्री प्राणनाथ परनामी टी.टी. कॉलेज, पदमपुर

सारांश

आधुनिक हिन्दी कविता भारतीय समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों का सशक्त प्रतिबिंब प्रस्तुत करती है। इसमें समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याओं, जैसे गरीबी, बेरोजगारी, जातिगत भेदभाव, लैंगिक असमानता, शोषण, अन्याय, भ्रष्टाचार तथा सामाजिक रूढ़ियों को प्रमुखता से अभिव्यक्त किया गया है। आधुनिक हिन्दी कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज के वंचित, शोषित एवं उपेक्षित वर्गों की पीड़ा को स्वर प्रदान किया है। साथ ही, उनकी कविताओं में सामाजिक परिवर्तन, समानता, स्वतंत्रता, मानवीय संवेदना और लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना की आकांक्षा भी दिखाई देती है। छायावादोत्तर काल से लेकर समकालीन हिन्दी कविता तक सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति में निरंतर परिवर्तन देखने को मिलता है। नागार्जुन, मुक्तिबोध, धूमिल, केदारनाथ सिंह तथा अन्य आधुनिक कवियों की रचनाओं में सामाजिक विसंगतियों, राजनीतिक विडंबनाओं और आम जनजीवन के संघर्षों का प्रभावशाली चित्रण मिलता है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य आधुनिक हिन्दी कविता में अभिव्यक्त सामाजिक विषयों का अध्ययन करना तथा यह विश्लेषण करना है कि कविता किस प्रकार सामाजिक चेतना के विकास, अन्याय के प्रतिरोध और सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन में योगदान देती है। इस प्रकार आधुनिक हिन्दी कविता केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक जागरूकता और मानवीय मूल्यों की स्थापना का एक महत्वपूर्ण साधन भी है।

मुख्य शब्दः आधुनिक हिन्दी कविता, सामाजिक यथार्थ, सामाजिक चेतना, सामाजिक परिवर्तन, शोषण, जातिगत भेदभाव, लैंगिक असमानता, राजनीतिक विडंबना, मानवीय संवेदना, जनजीवन।